झारखण्ड सरकार
राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन समिति
स्वास्थ्य चिकित्सा शिक्षा एवं परिवार कल्याण विभाग

प्रेस विज्ञप्ति

झारखंड का मातृत्व मृत्यु अनुपात (एमएमआर) 208 से घटकर 165 हुआ

झारखंड का आंकड़ा राष्ट्रीय औसत से कम करने के लिए और मेहनत करनी होगी: ***निधि खरे***

रांची, 7 जून, 2018 : मई 2018 को जारी किये गये सैंपल रजिस्ट्रेशन सर्वे (एसआरएस) आंकड़ों के अनुसार झारखंड में प्रसव के दौरान मातृत्व मृत्यु अनुपात 165 दर्ज किया गया है। जो पिछली बार (2011–2013 में) जारी आंकड़ों की तुलना में 43 कम है और राष्ट्रीय अनुपात 130 के काफी करीब पहुंच गया है। इस तरह झारखंड देश भर में अनुपात कम करने वाले राज्यों की श्रेणी में छठवें नंबर पर आ गया है। झारखंड में 21 प्रतिशत गिरावट दर्ज की गयी है। 2011–13 के जारी आंकड़े में झारखंड में मातृत्व मृत्यु अनुपात 208 दर्ज किया गया था। मई 2018 में जारी किये गये आंकड़े वर्ष 2014–2016 के लिए हैं जो 3,91,838 महिलाओं पर किये गये सर्वे पर आधारित हैं। सर्वेक्षण के दौरान पाया गया कि 37,641 स्वस्थ बच्चों का जन्म हुआ। इन आंकड़ों के आधार पर मातृत्व मृत्यु दर 15.8 दर्ज किया गया जबकि प्रसव के बाद माताओं में लाइफटाइम रिस्क की संभावना 0.6 प्रतिशत पायी गयी है।

गर्भवती माताओं की प्रसव के दौरान मृत्यु का अनुपात कम करना एक बड़ी चुनौती माना जाता है। इसके बावजूद स्वास्थ्य विभाग द्वारा लगातार किये जा रहे प्रयासों का नतीजा है कि मृत्यु दर में यह गिरावट दर्ज की गयी है। स्वास्थ्य विभाग की प्रधान सचिव निधि खरे ने कहा है कि जननी सुरक्षा योजना, जननी शिशु सुरक्षा कार्यक्रम और प्रधानमंत्री मातृत्व सुरक्षा अभियान की लगातार निगरानी और अनुश्रवण का परिणाम है कि मातृ मृत्यु अनुपात में कमी आयी है। उन्होंने कहा है कि हमें और ज्यादा काम करना होगा ताकि झारखंड का आंकड़ा राष्ट्रीय औसत से भी कम हो जाये। श्रीमती खरे ने कहा कि इसे और कम करने के लिए और सार्थक प्रयास करने होंगे। हाल ही में स्वास्थ्य विभाग ने बाल विवाह जो राज्य में 38 प्रतिशत है में कमी लाने के लिए मुखबिर योजना शुरू की है। इसके अलावा किशोरी गर्भावस्था (टिनएज प्रेगनेंसी) में कमी लाने के लिए स्वास्थ्य विभाग सहियाओं के माध्यम से ग्रामीणों में जागरूकता लाने का प्रयास कर रहा है। प्रधान सचिव निधि खरे ने कहा कि हाई रिस्क प्रेगनेंसी श्रेणी की महिलाओं की पहचान कर सुरक्षित प्रसव के लिए उन्हें 108 एंबुलेंस की मदद से फर्स्ट रेफरल युनिट (एफआरयु) तक पहुंचाने की व्यवस्था की गयी है। उन्होंने कहा कि हर महीने की नौ तारीख को प्रधानमंत्री मातृत्व सुरक्षित अभियान चलाया जाता है जिसमें एनिमिया की जांच कर आयरन और कैल्शियम की गोली दी जाती है। इसके अलावा चिकित्सक

महिलाओं की एएनसी जांच करते हैं। उन्होंने कहा कि एमएमआर कम करने के लिए दो बच्चों के बीच जन्म में अंतर रखने की सलाह देनी होगी ताकि मातृत्व मृत्यु दर में कमी आये।

आंकड़ों के संबंध में अभियान निदेशक, राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन कृपानंद झा ने कहा है कि मातृ मृत्यु अनुपात को कम करने भी झारखंड के सभी जिलों का प्रयास सराहनीय है। हालांकि जिलों में हो रही मृत्यु के अंतर को भी कम करना होगा। उन्होंने कहा कि इन आंकड़ों को कम करने के लिए स्वास्थ्य विभाग के कर्मचारियों और अधिकारियों को और प्रयास करना होगा। श्री कृपानंद झा ने कहा कि आंकड़ों को और कम करने के लिए ज्यादा से ज्यादा क्षेत्र भ्रमण करना होगा और निर्देशों का पालन करते हुए काम करना होगा।

सैंपल रजिस्ट्रेशन सर्वे (एसआरएस) द्वारा जारी किये गये आंकड़े –

2004-06	**2007-08**	**2010-12**	**2011-13**	**2014-16**
312	261	219	208	165

सीएसआर आंकड़ों के अनुसार राज्यों का प्रदर्शन जिसमें झारखंड राज्य का प्रदर्शन इन राज्यों से बेहतर है –

राज्य	**MMR (2014-16)**
असम	237
उत्तर प्रदेश	201
राजस्थान	199
ओडिशा	180
मध्य प्रदेश	173
झारखंड	165

स्रोत :एसआरएस (2014-16)

नोडल ऑफिसर
आई0 ई0 सी0 कोषांग